

कक्षा - 9

हिंदी (आलोक)

अध्याय – 9

कृष्ण-महिमा

रसखान (1933 -1618)

भाग – 1

कीर्ति बसुमतारी

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



रसखान (1933 -1618)

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

कवि परिचय

हिन्दी साहित्य की कृष्णभक्ति परंपरा में सूरदास, नंददास, मीराबाई आदि के साथ रसखान का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। रसखान एक अनन्य कृष्णभक्त मुसलमान कवि थे, जिनकी भक्ति निष्काम और प्रेमपूर्ण थी। वे कोमल हृदय वाले, भावुक और राजसी अभिमान से दूर रहने वाले व्यक्ति थे।

मूल नामः सैय्यद इब्राहिम।

उपनाम/नामः रसखान

जन्मः लगभग 1533 ई. के आस-पास।

आराध्यः श्रीकृष्ण (सगुण भक्तिधारा के कवि)।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

प्रेरणाः श्रीमद्भागवत का फारसी अनुवाद पढ़कर कृष्ण-प्रेम से प्रभावित हुए।

गुरुः गोकुल में गोस्वामी विठ्ठलनाथ जी से भक्ति की दीक्षा ग्रहण की।

साहित्यिक और अन्य तथ्यः

प्रिय स्थानः गोकुल, गोवर्धन, ब्रज, वृन्दावन, यमुना तट।

काव्य-भाषाः साहित्यिक ब्रजभाषा जिसमें सहजता, मधुरता और सरसता के गुण स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

प्रयुक्त छंदः दोहा, कवित्त और सवैया।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

प्रमुख रचनाएँ (चार प्रामाणिक मानी जाती हैं):

सुजान-रसखान, प्रेमवाटिका, दानलीला, अष्टयाम

अन्य तथ्यः कहा जाता है कि तुलसीदास जी ने सर्वप्रथम 'रामचरितमानस' की कथा यमुना तट पर रसखान को सुनाई थी। उनकी रचनाओं में भक्ति-रस, प्रेम-रस और काव्य-रस का सुंदर समन्वय है। इसी कारण उनका नाम 'रसखान' (रस की खान) पूर्णतः सार्थक सिद्ध होता है।

निधनः लगभग 1618 ई. के आस-पास।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

'कृष्णा-महिमा' शीर्षक के अन्तर्गत संकलित चारों छन्द सुजान-रसखान से लिए गए हैं। इन चारों छन्दों से कृष्ण भक्ति की महिमा ही प्रकट हुई है। भाव की तल्लीनता, मार्मिकता और भाषागत सरसता चारों छंदों में विद्यमान है। प्रथम छंद में अपने आराध्य कृष्ण के सान्निध्य में रहने की कवि गहरी इच्छा का संकेत मिलता है। दूसरे छंद में अपने उपास्य से जुड़े अलग-अलग उपकरणों पर सर्वस्व न्योछावर करने की चाहत व्यंजित हुई है। तीसरे छंद में कवि ने आराध्य श्रीकृष्ण के बाल रूप की माधुरी का

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

आकर्षक वर्णन किया है। चौथे छंद में गोपी-भाव से अपने उपास्य कृष्ण की तरह ही वेश धारण करने (मुरली को छोड़कर) की तीव्र चाहत प्रकट हुई है।

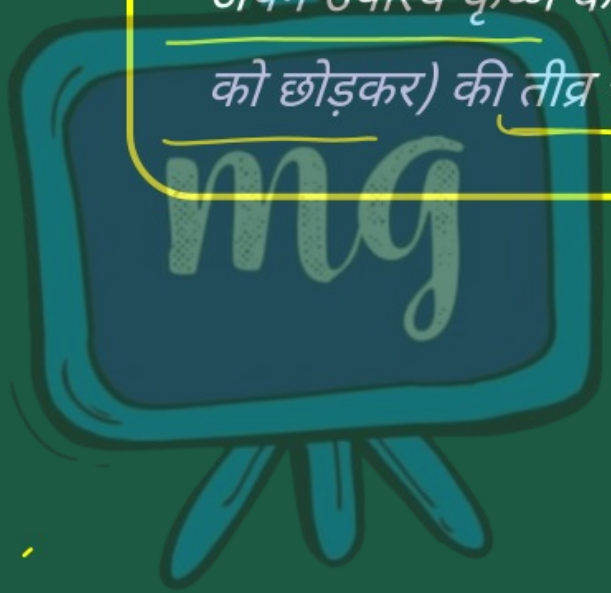

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্র শিক্ষা

Under CSR Support by
ipca | Foundation

(1) (मानुष हौं तो वही रसखान, बसौं ब्रज-गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पसु हौं तो कहा बसु मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मँझारन।

मानुष – মানুহ
बसौं – বাস কৰা
ग्वारन– গুৱালসকল, গোপসকল)
पसु - জন্তু
मँझारन- মাজ, মধ্য

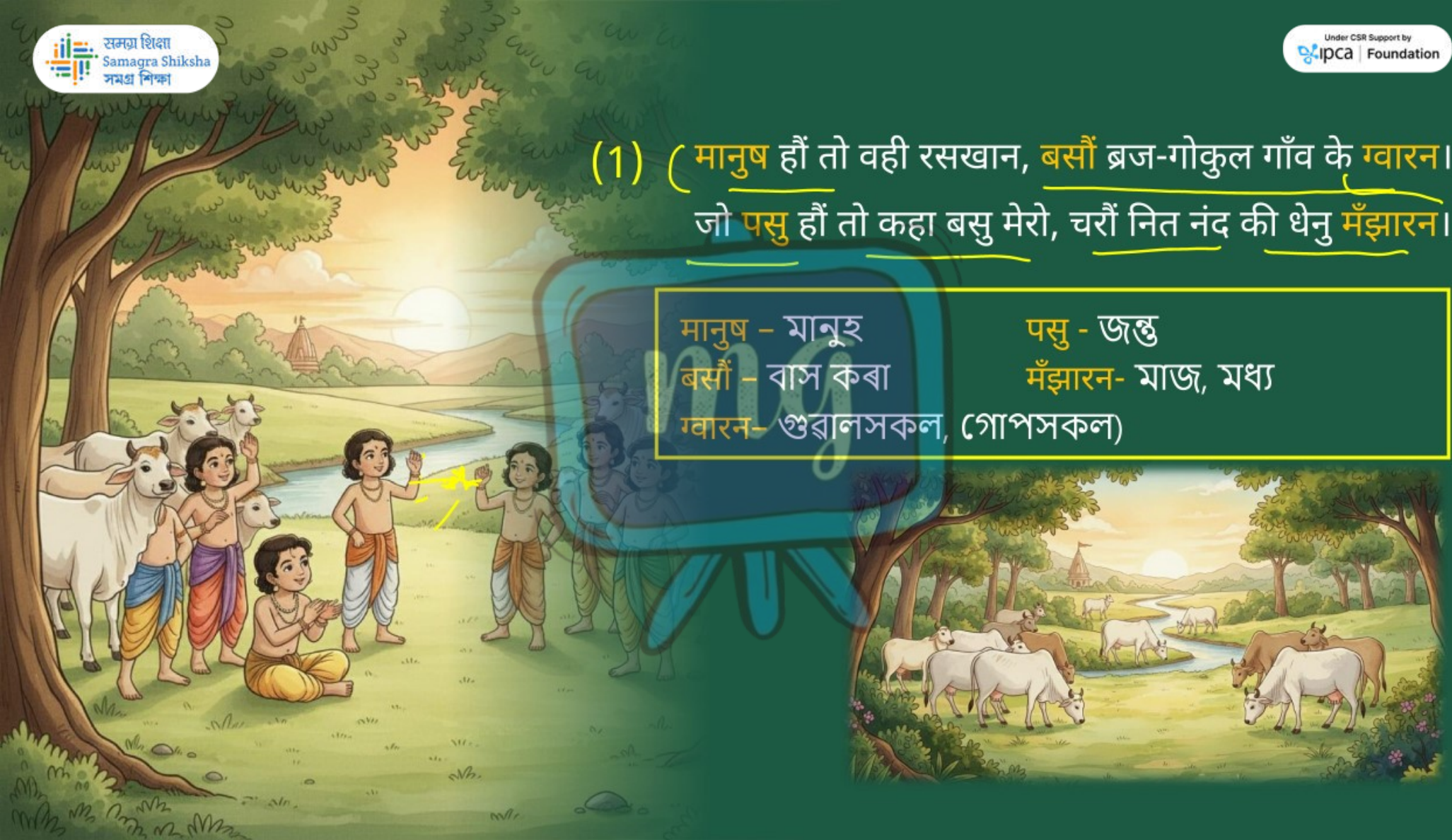

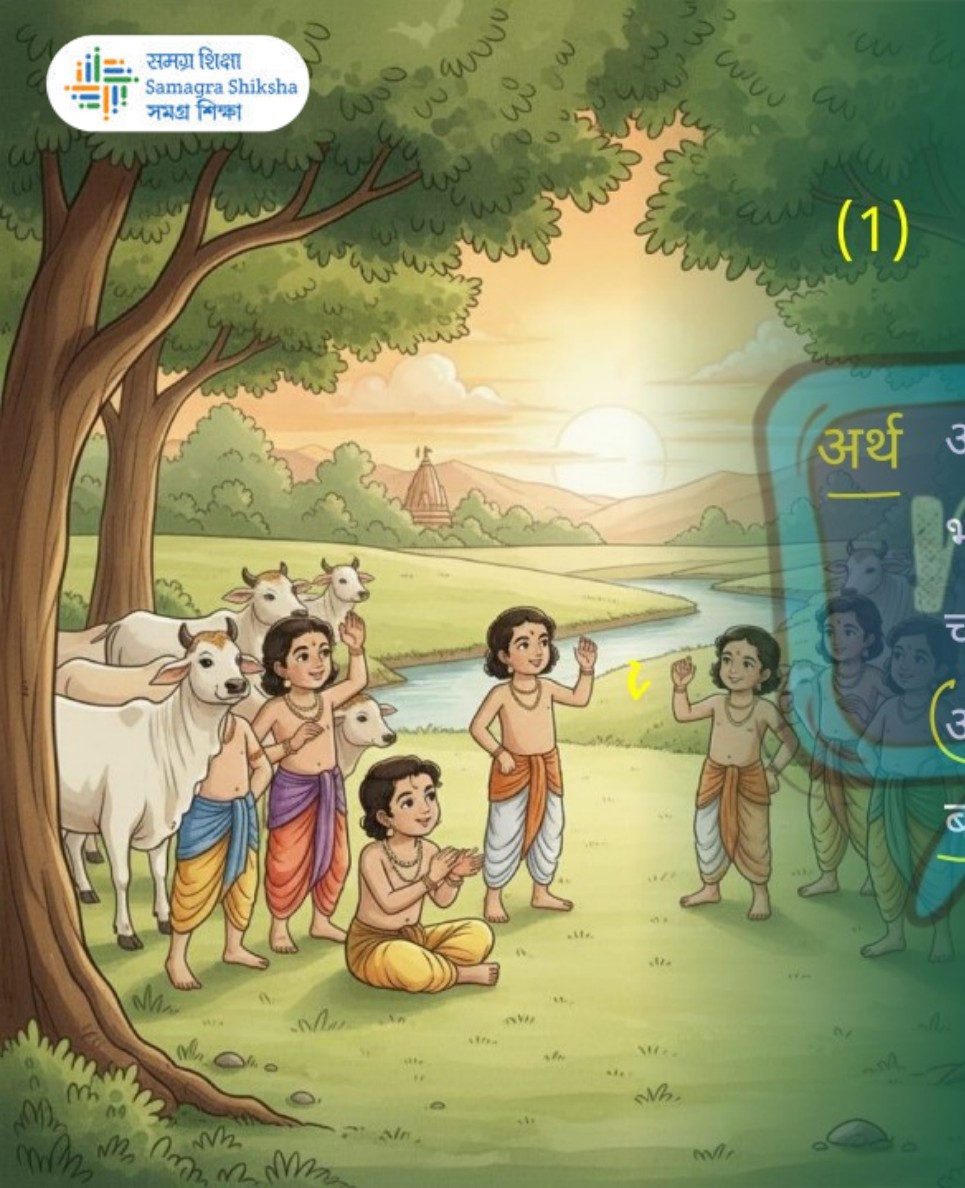

(1) मानुष हौं तो वही रसखान, बसौं ब्रज-गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पसु हौं तो कहा बसु मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मँझारन।

अर्थ अगर मैं मनुष्य बनूँ, तो उसी रसखान के रूप में (यानी, कृष्ण भक्त के रूप में) बस ब्रज और गोकुल के ग्वालों (गायों को चराने वालों) के बीच रहूँ ,
(अगर मैं पशु बनूँ, तो मेरा वश (नियंत्रण) नहीं, लेकिन मुझे नंद बाबा की गायों के झुंड (बीच) में चरने का सौभाग्य मिले.

पाहन हाँ तो वही गिरि को, जो धर्यो कर छत्र पुरंदर धारन ।
जो खग हाँ तो बसेरो करौं, मिली कालिन्दी-कुल-कदंब की डारन ।।

पाहन-পাথৰ, শিল	कर – হাত
पुरंदर– ইন্দ্ৰ, বিষ্ণু	खग - পক্ষী, চৰাই
डारन - গছৰ ডাল	कालिन्दी- যমুনা





पाहन हाँ तो वही गिरि को, जो धर्यो कर छत्र पुरंदर धारन ।
जो खग हाँ तो बसेरो करौं, मिली कालिन्दी-कुल-कदंब की डारन ।।

अर्थ

अगर मैं पत्थर बनूँ, तो उसी गोवर्धन पर्वत का पत्थर बनूँ, जिसे श्रीकृष्ण ने इंद्र के प्रकोप से बचाने के लिए अपनी उंगली पर छत्र (छतरी) की तरह उठाया था.

अगर मैं पक्षी बनूँ, तो यमुना नदी (कालिन्दी) के किनारे लगे कदंब के पेड़ की डाल पर ही अपना बसेरा (आवास) बनाऊँ ।



(2) या लकुटी अरु कामरिया पर, राज तिहूँ पुर कौ तजि डारौं।
आठ हूँ सिद्धि नवों निधि को सुख, नंद की गाइ चराइ बिसारौं।

लकुटी – এছাৰি	बिसारौं – পাহৰি যোৱা
कामरिया – কম্বল	तिहूँ पुर - ত্রিলোক

(2) या लकुटी अरु कामरिया पर, राज तिहूँ पुर कौ तजि डारौं।
आठ हूँ सिद्धि नवों निधि को सुख, नंद की गाइ चराइ बिसारौं।

अर्थ रसखान कहते है की इस लकुटी (डंडा) और कंबली के बदले मैं तीनों लोकों का राज्य भी छोड़ दूँ।
नंद बाबा की गायें चराने के सुख के लिए वे आठों सिद्धियाँ और नौ निधियाँ भी भूल सकते हैं।



'रसखान कबौं इन आँखिन सों ब्रज के बन-बाग तड़ाग निहारौं।'

कोटिक हीं कलधौत के धाम, करील के कुंजन ऊपर वारौं ॥

तड़ाग – পুখুৰী

निहारौं – চোৱা

कुंजन – জোপোহা

कलधौत के धाम- সোণ আৰু ৰূপৰ নগৰ

करील – কাঁইট থকা গছ

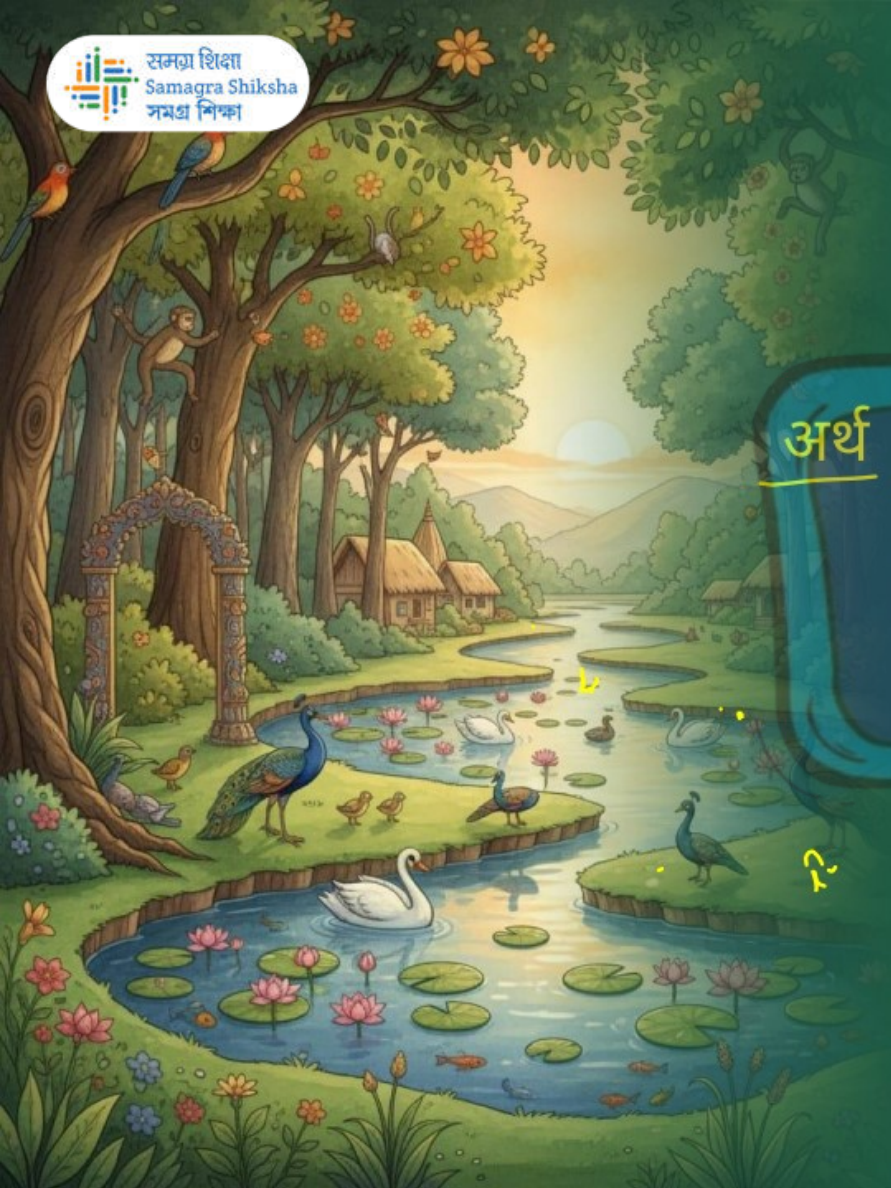

'रसखान कबौं इन आँखिन सों ब्रज के बन-बाग तड़ाग निहारौं।'
कोटिक हीं कलधौत के धाम, करील के कुंजन ऊपर वारौं ॥

अर्थ रसखान की कामना है कि कब वह अपनी आँखों से ब्रज के वन, बाग और तालाब देख सके।
वे ब्रज की करील की कुंजों (झाड़ियों) के लिए करोड़ों सोने-चाँदी के महलों को भी न्योछावर कर सकते हैं।

(3) धूरि भरे अति सोभित स्यामजू, तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।
खेलत खात फिरै अँगना, पग पैंजनीं बाजीं पीरीं कछोटी।

सोभित – शोभित	स्यामजू – कृष्ण,
पैंजनीं– जुनुका, नूपूर	पीरीं – हालधीया



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



(3) धूरि भरे अति सोभित स्यामजू, तैसी बनी सिर सुन्दर चोटी।
खेलत खात फिरै अँगना, पग पैंजनीं बाजीं पीरीं कछोटी।

अर्थ धूल से सने हुए श्री कृष्ण (साँवले रंग के) बहुत सुंदर लग रहे हैं, और उनके सिर पर वैसी ही एक सुंदर चोटी बनी हुई है। वे आँगन में खेलते-खाते घूम रहे हैं, उनके पैरों की पैंजनी (पायल) बज रही है, और उन्होंने कमर में पीली कछौटी (धोती) पहनी हई है।

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
সমগ্ৰ শিক্ষা

Under CSR Support by ipca | Foundation

वा छवि को रसखानि बिलोकत, वारत काम कलानिधि कोटी।
"काग के भाग कहा कहिये, हरि हाथ सों लै गयो माखन रोटी।"

बिलोकत - দৰ্শন কৰা	कलानिधि – চন্দ্ৰমা
काग – কাউৰী	भाग – ভাগ্য
हरि– কৃষ্ণ	



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



वा छवि को रसखानि बिलोकत, वारत काम कलानिधि कोटी।
"काग के भाग कहा कहिये, हरि हाथ सों लै गयो माखन रोटी।"

अर्थ रसखान कहते हैं कि उनकी इस छवि को देखकर, कामदेव भी अपनी करोड़ों कलाओं को उस पर न्योछावर कर देते हैं (अर्थात, उनकी सुंदरता अद्वितीय है)।

उस कौवे का भाग्य कितना बड़ा है, जो श्री कृष्ण के हाथ से माखन-रोटी लेकर उड़ गया।

(4) (मोर पखा सिर ऊपर राखिहाँ, गुंज की माल गरे पहिराँगी।
ओढ़ि पितम्बर, ले लकुटी बन, गोधन ग्वारनि संग फिराँगी।

गरे – डिङि गोधन – গৰু



समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation



(4) मोर पखा सिर ऊपर राखिहाँ, गुंज की माल गरे पहिराँगी।
ओढ़ि पितम्बर, ले लकुटी बन, गोधन ग्वारनि संग फिराँगी।

अर्थ कोई गोपी अपनी सखी से कहती है कि हे सखि ! मैं मोर-मुकुट को अपने सिर के ऊपर पहनूँगी, गुंजो की माला गले में धारण करूँगी ।

मैं पीले वस्त्र (पीतांबर) भी ओढ़ लूँगी और हाथ में लाठी लेकर जंगल में गायों और ग्वालिनों के साथ घूमने के लिए भी तैयार हूँ।



भावतो वोहि मेरे 'रसखानि,' सो तेरे कहे सब स्वाँग भरौंगी।
या मुरली मुरलीधर की, अधरान धरीं अधरा न धराँगी ॥

मुरली– वाँशी, मूरूली
अधरा – ओंठ

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha
समग्र शिक्षा

Under CSR Support by
ipca | Foundation

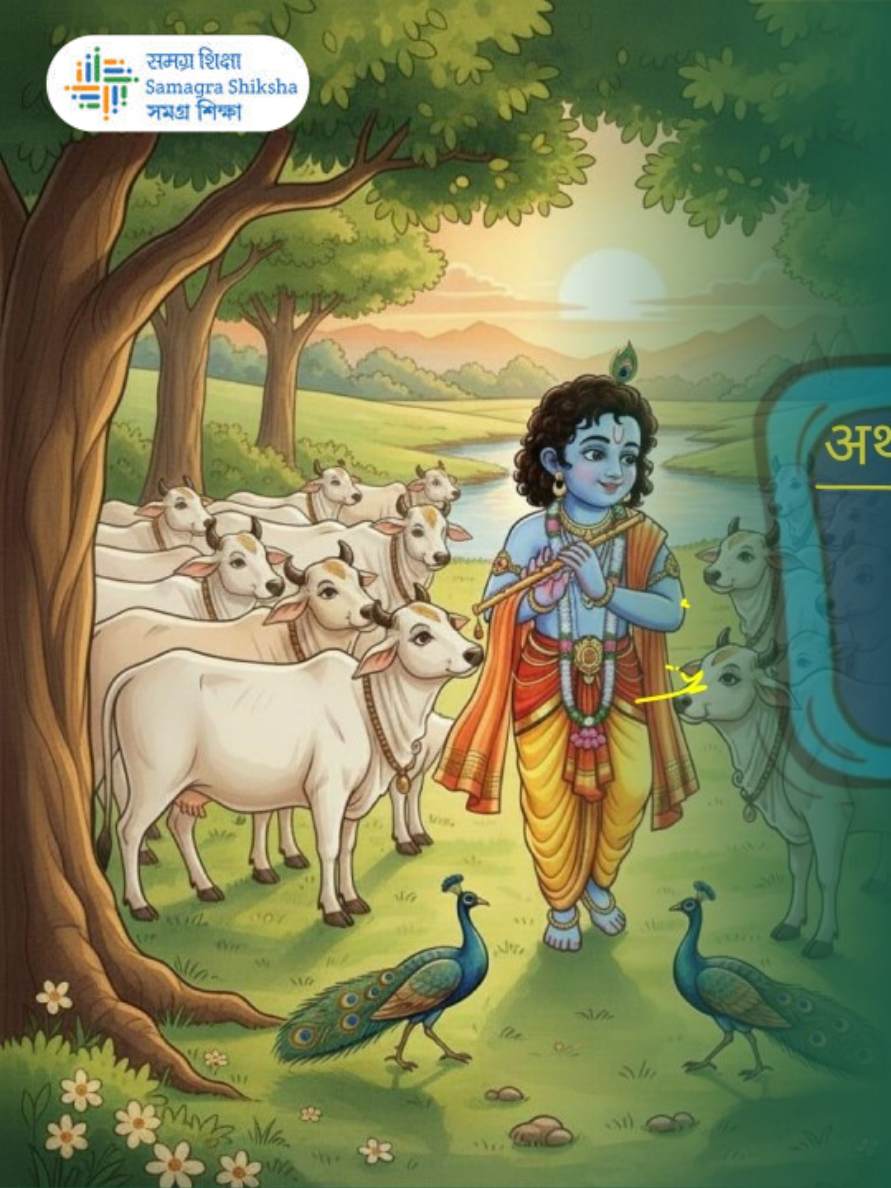

भावतो वोहि मेरे 'रसखानि,' सो तेरे कहे सब स्वाँग भरौंगी।
या मुरली मुरलीधर की, अधरान धरीं अधरा न धराँगी ॥

अर्थ रसखान कहते हैं कि वह (कृष्ण का रूप) मेरे मन को बहुत भाता है, इसलिए मैं तुम्हारे कहने पर वह सारा रूप-रंग (स्वाँग) धारण कर लूँगी।

परन्तु, मुरलीधर (श्रीकृष्ण) की मुरली को, जिसे उन्होंने अपने होठों पर रखा था, मैं अपने होठों पर कभी नहीं रखूँगी।

मूल्यांकन



1 | रसखान जी ने भक्ति की दीक्षा किससे ग्रहण की थी?

A तुलसीदास जी से

B सूरदास जी से

C गोस्वामी विठ्ठलनाथ जी से

मूल्यांकन



2 'कालिन्दी' शब्द से किस नदी का बोध होता है?

A सरस्वती

B यमुना

C ब्रह्मपुत्र

मूल्यांकन



3 ‘धूरि भरे अति सोभित स्यामजू’ में किस रूप का वर्णन है?

A राजसी कृष्ण का

B बालकृष्ण का

C योगी कृष्ण का